LALA JAGAT NARYAN EDUCATION COLLEGE JALALABAD (W)

207 हिंदी शिक्षण

D.El.Ed 2nd Year Notes

हिंदी शिक्षण के सिद्धान्त एवं पद्धतियाँ



पाठ्य सामग्री • D.El.Ed द्वितीय वर्ष • सत्र 2024–25

इकाई–1 : भाषायी कौशल

1. भाषायी कौशल

भाषायी कौशल के चार प्रमुख प्रकार हैं:

1. सुनना (श्रवण कौशल)
2. बोलना (कथन कौशल)
3. लिखना (लेखन कौशल)
4. पढ़ना (पठन कौशल)

(क) श्रवण कौशल

- श्रवण कौशल का अर्थ एवं महत्व।
- श्रवण कौशल के उद्देश्य एवं विधियाँ।
- श्रवण दोष के कारण एवं सुधार।

(ख) कथन कौशल

- कथन कौशल की परिभाषा एवं महत्व।
- कथन की विभिन्न विधियाँ।
- कथन कौशल के विभिन्न सोपान, जैसे:
    1. प्रश्नोत्तर
    2. चित्र वर्णन
    3. घटना वर्णन
    4. नाटक
    5. भाषण
    6. समाचार वाचन

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

7. टेलीफोन वार्ता आदि।

(ग) लेखन कौशल

- लेखन की प्रकृति, आवश्यकता एवं महत्व।
- लेखन की विभिन्न विधियाँ।
- लेखन के विभिन्न सोपान, जैसे:
  1. अनुलेख
  2. श्रुतलेख
  3. सुलेख
  4. श्यामपट्ट लेखन
- लेखन दोष, उनके कारण एवं निवारण आदि।

(घ) पठन कौशल

- पठन की प्रकृति एवं महत्व।
- पठन के विभिन्न सोपान।
- पठन के प्रकार।
- पठन कौशल की विभिन्न विधियाँ आदि।

इकाई–2 : व्याकरण शिक्षण की विधियाँ

1. वर्ण – परिभाषा एवं भेद।
2. शब्द – परिभाषा एवं भेद।
3. संधि – परिभाषा एवं भेद।
4. उपसर्ग एवं प्रत्यय।
5. विकारी एवं अविकारी पद।
6. उच्चारण एवं वर्तनी।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

इकाई–3 : रचना शिक्षण की विधियाँ

1. रचना का अर्थ, महत्व एवं उद्देश्य।
2. रचना के लिखित रूप, जैसे:
    - पत्र लेखन
    - निबंध लेखन
    - अनुच्छेद लेखन
    - कहानी लेखन
    - संवाद लेखन
    - सार संक्षेपण
    - रिपोर्ट लेखन आदि।

इकाई–4 : साहित्यिक विधाओं का परिचय

निम्नलिखित साहित्यिक विधाओं का सामान्य परिचय:

1. कविता
2. कहानी
3. निबंध
4. जीवनी
5. आत्मकथा
6. एकांकी

पढ़ने हेतु संदर्भित पुस्तकें

1. उदयवीर सक्सेना – हिंदी शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. हिंदी व्याकरण – शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. पांडे राम शुक्ल – हिंदी शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

4. उमा मंगल – हिंदी शिक्षण, आगरा पुस्तक भंडार।
5. केशव प्रसाद – हिंदी भाषा शिक्षण, धनपत राय एंड संस, दिल्ली।

हिंदी भाषा एवं शिक्षण (Hindi Language and Teaching)

इस अध्ययन सामग्री में चारों इकाइयों के सभी विषयों को सरल एवं स्पष्ट हिंदी भाषा में उदाहरण सहित समझाया गया है। प्रत्येक इकाई के अंत में माइंड मैप भी दिया गया है, ताकि परीक्षा की तैयारी और पुनरावृत्ति आसानी से की जा सके।

इकाई–1 : भाषायी कौशल (Language Skills)

1. भाषायी कौशल का अर्थ एवं परिचय

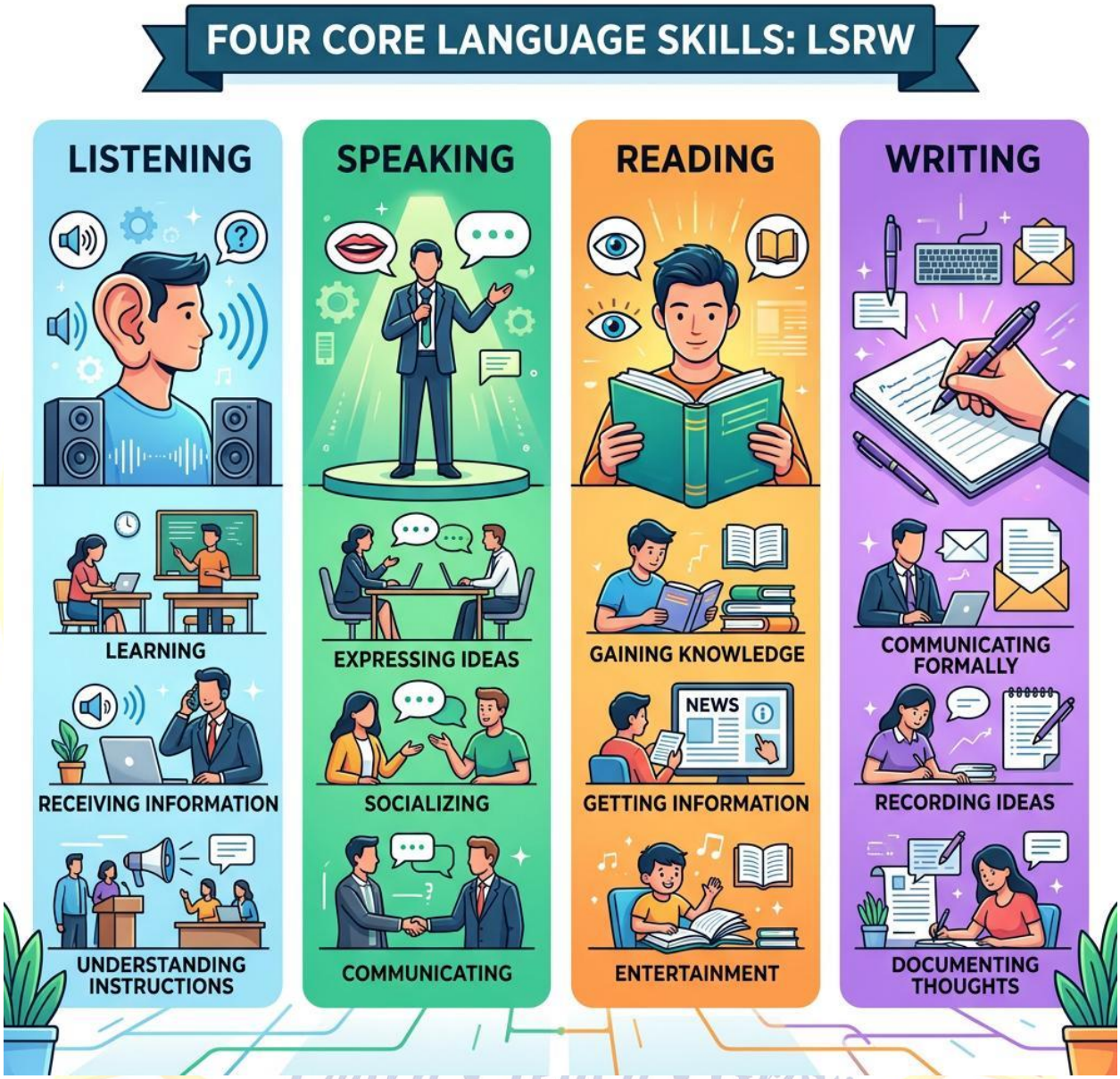
भाषा मनुष्य के विचारों, भावनाओं, अनुभवों तथा ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाने का प्रमुख साधन है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करता है और दूसरों के विचारों को समझता है।

भाषा सीखने के लिए चार प्रमुख कौशलों का विकास आवश्यक है। इन्हें भाषायी कौशल कहा जाता है।

भाषायी कौशल के चार प्रमुख प्रकार हैं:

1. श्रवण कौशल – सुनना।
2. कथन कौशल – बोलना।
3. पठन कौशल – पढ़ना।

4. लेखन कौशल – लिखना।


FOUR CORE LANGUAGE SKILLS: LSRW
LISTENING
LEARNING
RECEIVING INFORMATION
UNDERSTANDING INSTRUCTIONS
SPEAKING
EXPRESSING IDEAS
SOCIALIZING
COMMUNICATING
READING
GAINING KNOWLEDGE
NEWS
GETTING INFORMATION
ENTERTAINMENT
WRITING
COMMUNICATING FORMALLY
RECORDING IDEAS
DOCUMENTING THOUGHTS



भाषायी कौशल का महत्व

1. **बच्चों में भाषा संबंधी योग्यता का विकास होता है।**
2. **विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता बढ़ती है।**
3. **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व का विकास होता है।**
4. **सामाजिक संपर्क एवं संचार में सहायता मिलती है।**
5. **पढ़ने, लिखने, सुनने और बोलने की क्षमता विकसित होती है।**
6. **ज्ञान प्राप्त करने और दूसरों को समझने में सहायता मिलती है।**

(क) श्रवण कौशल (Listening Skill)

1. श्रवण कौशल का अर्थ

श्रवण कौशल का अर्थ है – किसी व्यक्ति द्वारा बोले गए शब्दों, वाक्यों, विचारों और भावनाओं को ध्यानपूर्वक सुनना तथा उनका सही अर्थ समझना।

केवल आवाज सुनना श्रवण नहीं है, बल्कि सुनकर उसका अर्थ समझना और उचित प्रतिक्रिया देना ही वास्तविक श्रवण कौशल है।

उदाहरण: कक्षा में शिक्षक जब बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में समझाते हैं, तो बच्चों का ध्यानपूर्वक सुनना और समझना श्रवण कौशल कहलाता है।

2. श्रवण कौशल का महत्व

1. भाषा सीखने का पहला आधार श्रवण कौशल है।
2. सही उच्चारण सीखने में सहायता करता है।
3. शब्द भंडार में वृद्धि होती है।
4. बच्चों में एकाग्रता और धैर्य का विकास होता है।
5. दूसरों के विचारों को समझने की क्षमता विकसित होती है।
6. सुनकर निर्देशों का पालन करना आसान होता है।
7. सामाजिक व्यवहार और आपसी संबंध अच्छे बनते हैं।

3. श्रवण कौशल के उद्देश्य

- ध्यानपूर्वक सुनने की आदत विकसित करना।
- सुनी हुई बातों को समझना।
- मुख्य विचारों की पहचान करना।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

- सही एवं गलत जानकारी में अंतर करना।
- सुनकर प्रश्नों के उत्तर देना।
- ध्वनियों और शब्दों का सही ज्ञान प्राप्त करना।

4. श्रवण कौशल की विधियाँ

1. कहानी सुनाना: शिक्षक बच्चों को कहानी सुनाते हैं और बाद में प्रश्न पूछते हैं।

उदाहरण – प्यासे कौए की कहानी सुनाकर पूछना कि कौए ने पानी कैसे पिया?

2. कविता सुनाना: शिक्षक कविता का उचित लय एवं भाव के साथ वाचन करते हैं।

3. वार्तालाप विधि: शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच बातचीत होती है।

4. श्रुतलेख विधि: शिक्षक शब्द या वाक्य बोलते हैं और विद्यार्थी उन्हें सुनकर लिखते हैं।

5. ऑडियो विधि: रेडियो, रिकॉर्डिंग या अन्य श्रव्य सामग्री के माध्यम से बच्चों को सुनाया जाता है।

6. समाचार सुनना: विद्यार्थियों को समाचार सुनाकर मुख्य घटनाओं की जानकारी प्राप्त करवाई जाती है।

5. श्रवण दोष के कारण

1. **सुनने में रुचि की कमी।**
2. **वातावरण में अधिक शोर।**

3. कठिन शब्दों का प्रयोग।
4. एकाग्रता की कमी।
5. भाषा का अपर्याप्त ज्ञान।
6. शिक्षक की अस्पष्ट आवाज।
7. श्रवण संबंधी शारीरिक समस्या।

6. श्रवण दोष का सुधार

- कक्षा में शांत वातावरण बनाना चाहिए।
- सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- बच्चों को ध्यानपूर्वक सुनने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- कहानी और कविता सुनाने का अभ्यास करवाना चाहिए।
- ऑडियो सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।
- सुनने के बाद प्रश्न पूछने चाहिए।
- यदि बच्चे को सुनने में शारीरिक कठिनाई हो, तो अभिभावकों को विशेषज्ञ से सलाह लेने के लिए कहना चाहिए।

(ख) कथन कौशल (Speaking Skill)

1. कथन कौशल का अर्थ

कथन कौशल का अर्थ है अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और जानकारियों को मौखिक रूप से स्पष्ट, शुद्ध एवं प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करना।

बोलना भाषा का महत्वपूर्ण कौशल है। इसके द्वारा व्यक्ति दूसरों के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

उदाहरण: विद्यार्थी का कक्षा में खड़े होकर अपने विद्यालय के बारे में पाँच वाक्य बोलना कथन कौशल का उदाहरण है।

2. कथन कौशल का महत्व

1. **आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।**
2. **सही उच्चारण का विकास होता है।**
3. **विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना आता है।**
4. **शब्द भंडार में वृद्धि होती है।**
5. **नेतृत्व क्षमता विकसित होती है।**
6. **सामाजिक एवं संचार संबंधी योग्यता बढ़ती है।**
7. **बच्चों में झिझक और संकोच कम होता है।**

3. कथन कौशल के उद्देश्य

- **स्पष्ट एवं शुद्ध बोलने की क्षमता विकसित करना।**
- **सही शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करना।**
- **विचारों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना।**
- **उचित आवाज, गति और लय का प्रयोग करना।**
- **बातचीत करने की योग्यता विकसित करना।**
- **सार्वजनिक रूप से बोलने का आत्मविश्वास बढ़ाना।**

4. कथन कौशल की विभिन्न विधियाँ एवं सोपान

1. प्रश्नोत्तर विधि

इस विधि में शिक्षक विद्यार्थियों से प्रश्न पूछते हैं और विद्यार्थी उत्तर देते हैं।

उदाहरण:

शिक्षक – भारत की राजधानी क्या है?

विद्यार्थी – भारत की राजधानी नई दिल्ली है।

2. चित्र वर्णन

विद्यार्थियों को कोई चित्र दिखाया जाता है और वे उसके बारे में अपने विचार बताते हैं।



ASHISH KUMAR
Learn • Teach • Grow

उदाहरण – गाँव के चित्र को देखकर विद्यार्थी बताएँगे कि वहाँ पेड़, घर, खेत और पशु दिखाई दे रहे हैं।

3. घटना वर्णन

इसमें विद्यार्थी किसी घटना या अनुभव का वर्णन करते हैं।

उदाहरण – स्वतंत्रता दिवस समारोह का वर्णन करना।

4. नाटक विधि

विद्यार्थी विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाकर संवाद बोलते हैं।

उदाहरण – राजा और मंत्री के बीच बातचीत का नाटक।

5. भाषण विधि

विद्यार्थी किसी विषय पर अपने विचार व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करते हैं।

उदाहरण – स्वच्छ भारत अभियान पर भाषण।

6. समाचार वाचन

विद्यार्थी समाचार पत्र से समाचार पढ़कर सुनाते हैं। इससे उच्चारण और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

7. टेलीफोन वार्ता

दो व्यक्ति टेलीफोन पर बातचीत करते हैं। इससे सामान्य बातचीत और संवाद कौशल विकसित होता है।

5. कथन कौशल के सुधार के उपाय

- प्रतिदिन बातचीत का अभ्यास करवाना।
- कहानी और कविता सुनाने के अवसर देना।
- वाद-विवाद और भाषण प्रतियोगिताएँ करवाना।

- समूह चर्चा करवाना।
- बच्चों की गलतियों को प्रेमपूर्वक सुधारना।
- शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करवाना।

(ग) लेखन कौशल (Writing Skill)

1. लेखन कौशल का अर्थ

लेखन कौशल का अर्थ है अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को लिखित रूप में स्पष्ट, शुद्ध तथा व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करना।

लेखन भाषा का एक महत्वपूर्ण कौशल है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को स्थायी रूप में सुरक्षित रख सकता है।

उदाहरण: विद्यार्थी का अपने मित्र को जन्मदिन की शुभकामनाएँ देने के लिए पत्र लिखना लेखन कौशल है।

2. लेखन की प्रकृति

1. लेखन एक रचनात्मक प्रक्रिया है।
2. इसमें विचारों को क्रमबद्ध किया जाता है।
3. भाषा और व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।
4. शुद्ध वर्तनी और विराम चिह्नों का प्रयोग होता है।
5. लेखन के लिए अभ्यास और धैर्य आवश्यक है।

3. लेखन की आवश्यकता एवं महत्व

- विचारों को स्थायी रूप से सुरक्षित रखना।
- ज्ञान और अनुभवों का आदान-प्रदान करना।

- परीक्षा में उत्तर लिखने की क्षमता विकसित करना।
- कल्पना शक्ति और रचनात्मकता बढ़ाना।
- शुद्ध भाषा एवं व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करना।
- पत्र, आवेदन, निबंध और रिपोर्ट लिखना सीखना।

4. लेखन की विभिन्न विधियाँ

1. अनुलेख

किसी पुस्तक या लिखित सामग्री को देखकर उसी प्रकार लिखना अनुलेख कहलाता है।

उदाहरण – पुस्तक में लिखे वाक्य को देखकर कॉपी में लिखना।

2. श्रुतलेख

शिक्षक द्वारा बोले गए शब्दों और वाक्यों को सुनकर लिखना श्रुतलेख कहलाता है।

उदाहरण – शिक्षक बोलते हैं, "भारत एक महान देश है।" विद्यार्थी इसे सुनकर लिखते हैं।

3. सुलेख

सुंदर, साफ और आकर्षक अक्षरों में लिखने की कला को सुलेख कहते हैं।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow



4. श्यामपट्ट लेखन

शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर साफ, सुंदर और व्यवस्थित ढंग से लिखना श्यामपट्ट लेखन कहलाता है।

इसके मुख्य गुण:

- **अक्षर स्पष्ट होने चाहिए।**
- **लिखावट सुंदर होनी चाहिए।**
- **शब्दों के बीच उचित दूरी होनी चाहिए।**
- **मुख्य बिंदुओं को व्यवस्थित लिखना चाहिए।**
- **लिखावट सभी विद्यार्थियों को दिखाई देनी चाहिए।**

5. लेखन के दोष

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow

1. गलत वर्तनी लिखना।
2. अक्षरों का सही आकार न बनाना।
3. शब्दों के बीच उचित दूरी न रखना।
4. मात्रा संबंधी गलतियाँ करना।
5. विराम चिह्नों का गलत प्रयोग।
6. अक्षरों को अस्पष्ट लिखना।
7. वाक्यों को अव्यवस्थित लिखना।

6. लेखन दोषों के कारण

- नियमित अभ्यास की कमी।
- वर्णमाला का सही ज्ञान न होना।
- गलत लिखने की आदत।
- जल्दबाजी में लिखना।
- शिक्षक द्वारा उचित मार्गदर्शन न मिलना।
- भाषा और व्याकरण का अपर्याप्त ज्ञान।

7. लेखन दोषों का निवारण

- प्रतिदिन लेखन का अभ्यास करवाना।
- सुलेख लिखवाना।
- श्रुतलेख का नियमित अभ्यास करवाना।
- गलतियों को पहचानकर सुधार करवाना।
- सही वर्तनी और मात्राओं का ज्ञान देना।
- विद्यार्थियों को साफ और सुंदर लिखने के लिए प्रेरित करना।

(घ) पठन कौशल (Reading Skill)

1. पठन कौशल का अर्थ

पठन कौशल का अर्थ है लिखित भाषा, शब्दों, वाक्यों और अनुच्छेदों को देखकर सही ढंग से पढ़ना तथा उनका अर्थ समझना।

पठन केवल शब्दों का उच्चारण करना नहीं है, बल्कि पढ़ी हुई सामग्री को समझना भी है।

उदाहरण: विद्यार्थी द्वारा हिंदी की पुस्तक में दी गई कहानी पढ़ना और उसके प्रश्नों के उत्तर देना पठन कौशल कहलाता है।

2. पठन की प्रकृति

1. पठन एक मानसिक प्रक्रिया है।
2. इसमें आँखों और मस्तिष्क का समन्वय होता है।
3. इसमें शब्दों की पहचान की जाती है।
4. पढ़ी हुई सामग्री का अर्थ समझा जाता है।
5. पठन से ज्ञान और अनुभव में वृद्धि होती है।

3. पठन कौशल का महत्व

- ज्ञान में वृद्धि होती है।
- शब्द भंडार विकसित होता है।
- कल्पना शक्ति का विकास होता है।
- भाषा का सही ज्ञान प्राप्त होता है।
- आत्मनिर्भर होकर अध्ययन करना आता है।
- विचार शक्ति और समझने की क्षमता बढ़ती है।

4. पठन के विभिन्न सोपान

1. वर्ण पहचान: सबसे पहले अक्षरों की पहचान करना।

2. शब्द पहचान: वर्णों को मिलाकर शब्द पढ़ना।
3. वाक्य पठन: शब्दों को मिलाकर वाक्य पढ़ना।
4. अनुच्छेद पठन: छोटे-छोटे अनुच्छेद पढ़ना।
5. अर्थ ग्रहण: पढ़ी हुई सामग्री का अर्थ समझना।
6. प्रतिक्रिया देना: पढ़ी हुई सामग्री के बारे में अपने विचार व्यक्त करना।

5. पठन के प्रकार

1. सस्वर पठन: आवाज के साथ पढ़ना।

उदाहरण – कक्षा में शिक्षक के सामने कविता पढ़ना।

2. मौन पठन: बिना आवाज किए मन ही मन पढ़ना।

उदाहरण – पुस्तकालय में बैठकर कहानी पढ़ना।

3. गहन पठन: किसी विषय को अच्छी तरह समझने के लिए ध्यानपूर्वक पढ़ना।

4. व्यापक पठन: अधिक जानकारी और आनंद प्राप्त करने के लिए विभिन्न पुस्तकें पढ़ना।

5. आदर्श पठन: शिक्षक द्वारा उचित उच्चारण, गति और भाव के साथ पढ़कर सुनाना।

6. पठन कौशल की विधियाँ

- वर्णमाला विधि।
- ध्वनि विधि।
- शब्द विधि।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

- वाक्य विधि।
- कहानी विधि।
- सामूहिक पठन विधि।
- व्यक्तिगत पठन विधि।

7. पठन कौशल में सुधार के उपाय

1. प्रतिदिन पुस्तक पढ़ने की आदत डालना।
2. सरल कहानियों से शुरुआत करना।
3. कठिन शब्दों का अर्थ समझाना।
4. शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करवाना।
5. पुस्तकालय का उपयोग करवाना।
6. पढ़ने के बाद प्रश्न पूछना।

इकाई–1 का माइंड मैप

भाषायी कौशल

भाषा सीखने के चार आधार

1. श्रवण कौशल

सुनना

कहानी, कविता, वार्तालाप, श्रुतलेख

2. कथन कौशल

बोलना

प्रश्नोत्तर, भाषण, नाटक, चित्र वर्णन

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

3. लेखन कौशल

लिखना

अनुलेख, श्रुतलेख, सुलेख, श्यामपट्ट

4. पठन कौशल

पढ़ना

सस्वर, मौन, गहन, व्यापक पठन

मुख्य उद्देश्य: प्रभावशाली भाषा एवं संचार क्षमता का विकास

इकाई–2 : व्याकरण शिक्षण की विधियाँ

1. व्याकरण का अर्थ एवं परिचय

व्याकरण भाषा का वह शास्त्र है जिसके द्वारा भाषा को शुद्ध रूप से बोलने, पढ़ने और लिखने के नियमों का ज्ञान प्राप्त होता है।

व्याकरण हमें बताता है कि शब्दों का निर्माण कैसे होता है, वाक्य कैसे बनाए जाते हैं और भाषा का शुद्ध प्रयोग किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण:

- **अशुद्ध वाक्य – राम स्कूल जाती है।**
- **शुद्ध वाक्य – राम स्कूल जाता है।**

इस प्रकार व्याकरण भाषा को शुद्ध और व्यवस्थित बनाता है।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

व्याकरण शिक्षण का महत्व

1. भाषा को शुद्ध बोलना और लिखना सिखाता है।
2. शब्दों और वाक्यों की रचना का ज्ञान देता है।
3. विद्यार्थियों की भाषा संबंधी गलतियाँ दूर करता है।
4. पठन और लेखन कौशल को विकसित करता है।
5. भाषा में स्पष्टता और प्रभावशीलता लाता है।
6. विद्यार्थियों में तार्किक चिंतन का विकास करता है।

व्याकरण शिक्षण की प्रमुख विधियाँ

1. आगमन विधि (Inductive Method)

इस विधि में पहले विद्यार्थियों को उदाहरण दिए जाते हैं और फिर उन उदाहरणों के आधार पर नियम समझाया जाता है।

उदाहरण:

- राम खेलता है।
- मोहन पढ़ता है।
- सोहन लिखता है।

इन वाक्यों में राम, मोहन और सोहन व्यक्तियों के नाम हैं। अतः ये व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं।

2. निगमन विधि (Deductive Method)

इस विधि में पहले नियम बताया जाता है और फिर उदाहरणों द्वारा समझाया जाता है।

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow

उदाहरण: संज्ञा किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को कहते हैं।

जैसे – राम, पुस्तक, दिल्ली, ईमानदारी।

3. पाठ्यपुस्तक विधि

इस विधि में व्याकरण का शिक्षण पाठ्यपुस्तक के माध्यम से किया जाता है।

4. अभ्यास विधि

इसमें विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अभ्यास करवाए जाते हैं।

उदाहरण – रिक्त स्थान भरना, सही शब्द चुनना और वाक्य शुद्ध करना।

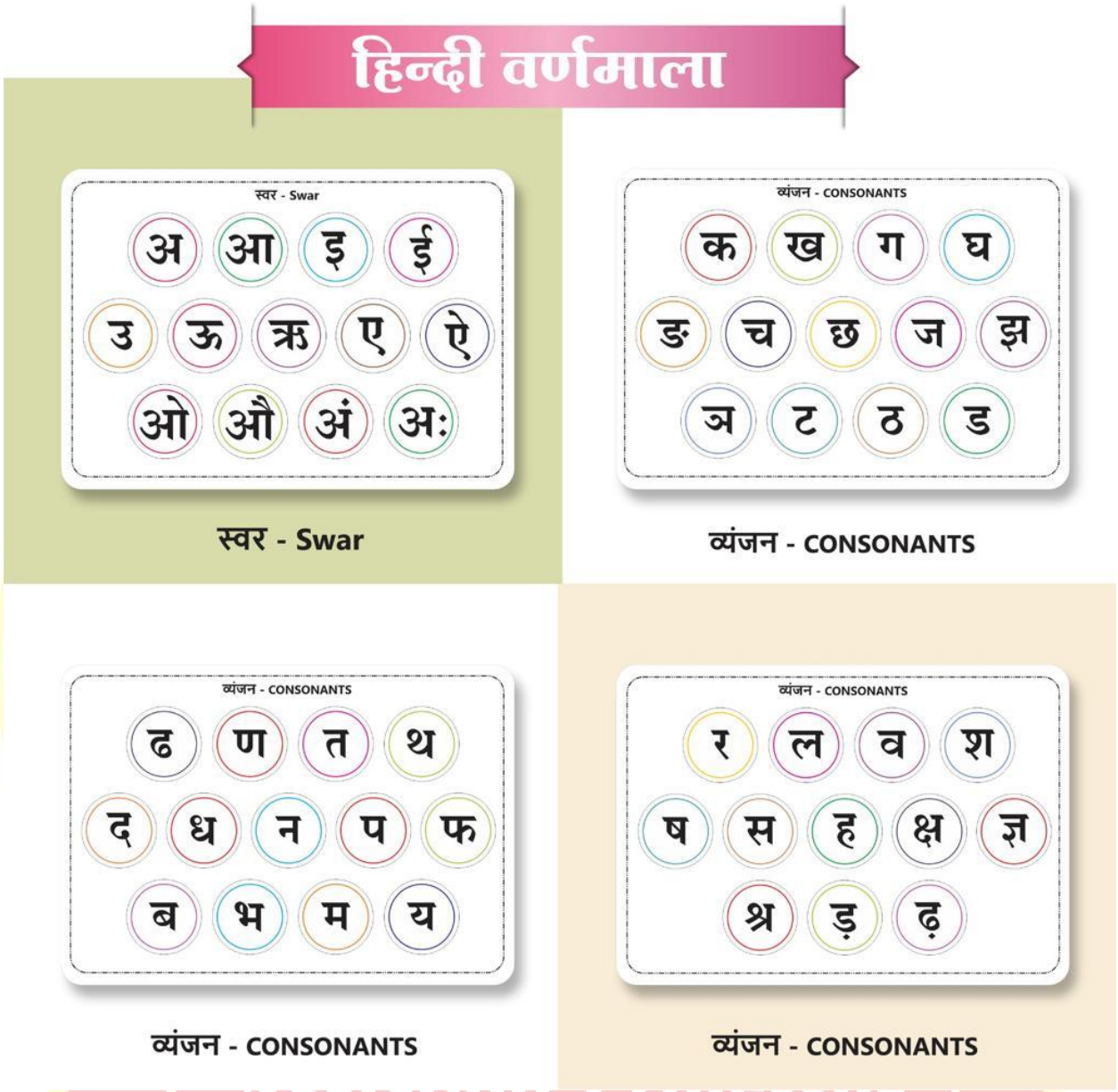
2. वर्ण – परिभाषा एवं भेद

वर्ण का अर्थ

भाषा की सबसे छोटी ध्वनि इकाई, जिसके और छोटे सार्थक ध्वनि खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।

हिंदी भाषा में वर्णों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा जाता है:

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow



Assistant Professor
Learn • Teach • Grow

(क) स्वर

जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता से होता है, उन्हें स्वर कहते हैं।

हिंदी के प्रचलित स्वर हैं:

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

अं और अः को परंपरागत वर्णमाला में अयोगवाह कहा जाता है।

स्वरों के उदाहरण:

- **अ – अनार**
- **आ – आम**
- **इ – इमली**
- **ई – ईख**
- **उ – उल्लू**
- **ऊ – ऊन**

(ख) व्यंजन

जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

उदाहरण: क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, त, थ, द, प, फ, ब, भ, म आदि।

व्यंजनों के प्रमुख वर्ग:

1. **स्पर्श व्यंजन – क से म तक के पाँच वर्ग।**
2. **अंतःस्थ व्यंजन – य, र, ल, व।**
3. **ऊष्म व्यंजन – श, ष, स, ह।**

वर्णों का महत्व

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

- शुद्ध उच्चारण में सहायता।
- शब्द निर्माण का आधार।
- पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास।
- भाषा की ध्वनियों का ज्ञान।

3. शब्द – परिभाषा एवं भेद

शब्द का अर्थ

वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

उदाहरण: कमल, विद्यालय, पुस्तक, विद्यार्थी।

जैसे क, म, ल वर्णों से मिलकर कमल शब्द बनता है।

शब्द के प्रमुख भेद

1. उत्पत्ति के आधार पर

- तत्सम शब्द – संस्कृत से बिना परिवर्तन के आए शब्द। उदाहरण – अग्नि, सूर्य, रात्रि।
- तद्भव शब्द – संस्कृत से परिवर्तित होकर बने शब्द। उदाहरण – आग, सूरज, रात।
- देशज शब्द – स्थानीय बोलियों से प्रचलित शब्द। उदाहरण – खटिया, पगड़ी।
- विदेशी शब्द – अन्य भाषाओं से आए शब्द। उदाहरण – स्कूल, किताब, अदालत।

2. रचना के आधार पर

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

- रूढ़ शब्द – जिनके खंडों का अलग-अलग अर्थ नहीं होता। उदाहरण – घर, घोड़ा।
- यौगिक शब्द – दो सार्थक शब्दों से बने शब्द। उदाहरण – विद्यालय (विद्या + आलय)।
- योगरूढ़ शब्द – जो विशेष अर्थ में रूढ़ हो गए हों। उदाहरण – पंकज (कमल)।

3. प्रयोग के आधार पर

शब्दों का प्रयोग वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि के रूप में होता है।

4. संधि – परिभाषा एवं भेद

संधि का अर्थ

दो वर्णों के मेल से होने वाले ध्वनि परिवर्तन को संधि कहते हैं।

संधि में दो वर्ण आपस में मिलकर नया रूप धारण करते हैं।

उदाहरण:

विद्या + आलय = विद्यालय।

संधि के प्रमुख भेद

1. स्वर संधि

जब दो स्वरों के मेल से परिवर्तन होता है, तो उसे स्वर संधि कहते हैं।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

इसके प्रमुख प्रकार:

- **दीर्घ संधि – विद्या + आलय = विद्यालय।**
- **गुण संधि – महा + ईश = महेश।**
- **वृद्धि संधि – सदा + एव = सदैव।**
- **यण संधि – अति + अधिक = अत्यधिक।**
- **अयादि संधि – ने + अन = नयन।**

2. व्यंजन संधि

जब व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से परिवर्तन होता है, तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

उदाहरण:

- **सत् + जन = सज्जन।**
- **उत् + चारण = उच्चारण।**

3. विसर्ग संधि

जब विसर्ग (ः) के बाद आने वाले वर्ण के कारण परिवर्तन होता है, तो उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

उदाहरण:

- **मनः + योग = मनोयोग।**
- **निः + आशा = निराशा।**

संधि का महत्व

- **शब्द निर्माण का ज्ञान मिलता है।**

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow

- शुद्ध वर्तनी में सहायता मिलती है।
- भाषा को समझने की क्षमता बढ़ती है।
- संस्कृत एवं हिंदी शब्दों का ज्ञान प्राप्त होता है।

5. उपसर्ग एवं प्रत्यय

(क) उपसर्ग का अर्थ

जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देता है, उसे उपसर्ग कहते हैं।

उदाहरण:

उपसर्ग	मूल शब्द	नया शब्द
अ	न्याय	अन्याय
सु	पुत्र	सुपुत्र
प्र	गति	प्रगति
अनु	शासन	अनुशासन
निर्	दोष	निर्दोष
उप	कार	उपकार

उपसर्ग का महत्व

1. नए शब्द बनाने में सहायता करता है।
2. शब्दों के अर्थ में परिवर्तन करता है।
3. शब्द भंडार बढ़ाता है।
4. भाषा को अधिक प्रभावशाली बनाता है।

(ख) प्रत्यय का अर्थ

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

जो शब्दांश किसी मूल शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाता है, उसे प्रत्यय कहते हैं।

उदाहरण:

मूल शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
सुंदर	ता	सुंदरता
अपना	पन	अपनापन
पढ़	आई	पढ़ाई
लिख	अक	लेखक
भला	ई	भलाई

प्रत्यय के भेद

1. कृत प्रत्यय: जो धातु के अंत में लगते हैं।

उदाहरण – पढ़ + आई = पढ़ाई, लिख + अक = लेखक।

2. तद्धित प्रत्यय: जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगते हैं।

उदाहरण – सुंदर + ता = सुंदरता, अपना + पन = अपनापन।

6. विकारी एवं अविकारी पद

हिंदी व्याकरण में शब्दों को वाक्य में उनके रूप परिवर्तन के आधार पर दो भागों में बाँटा जाता है।

(क) विकारी पद

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक या काल के कारण परिवर्तन होता है, उन्हें विकारी पद कहते हैं।

विकारी पद के चार मुख्य भेद हैं:

1. संज्ञा: किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

उदाहरण – राम, पुस्तक, दिल्ली, सुंदरता।

2. सर्वनाम: संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

उदाहरण – मैं, तुम, वह, हम, वे।

3. विशेषण: संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

उदाहरण – सुंदर फूल, अच्छा लड़का, पाँच पुस्तकें।

4. क्रिया: जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।

उदाहरण – पढ़ना, लिखना, खाना, सोना।

(ख) अविकारी पद

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, पुरुष या काल के कारण परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी या अव्यय पद कहते हैं।

इसके चार प्रमुख भेद हैं:

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

1. क्रिया विशेषण – धीरे, जल्दी, आज, कल।
2. संबंधबोधक – के ऊपर, के नीचे, के पास।
3. समुच्चयबोधक – और, लेकिन, अथवा।
4. विस्मयादिबोधक – वाह!, अरे!, हाय!

उदाहरण:

राम धीरे चलता है।

इस वाक्य में 'राम' संज्ञा और 'चलता' क्रिया है, जबकि 'धीरे' अविकारी पद है।

7. उच्चारण एवं वर्तनी

(क) उच्चारण का अर्थ

किसी वर्ण, शब्द या वाक्य को बोलते समय उसकी ध्वनि को सही ढंग से व्यक्त करना उच्चारण कहलाता है।

उदाहरण:

- विद्यालय
- पुस्तक
- अध्यापक
- विद्यार्थी

इन शब्दों को सही ध्वनि और स्पष्टता के साथ बोलना शुद्ध उच्चारण कहलाता है।

शुद्ध उच्चारण का महत्व

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

1. भाषा स्पष्ट बनती है।
2. दूसरों को बात समझने में आसानी होती है।
3. बोलने का आत्मविश्वास बढ़ता है।
4. भाषा की सुंदरता बनी रहती है।

अशुद्ध उच्चारण के कारण

- मातृभाषा का प्रभाव।
- अभ्यास की कमी।
- ध्वनियों का सही ज्ञान न होना।
- गलत बोलने की आदत।
- क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव।

उच्चारण सुधार के उपाय

- शिक्षक का आदर्श वाचन सुनना।
- कठिन शब्दों का बार-बार अभ्यास।
- कविता एवं कहानी का वाचन।
- शब्दों की ध्वनियों का अभ्यास।
- शुद्ध भाषा बोलने का वातावरण बनाना।

(ख) वर्तनी का अर्थ

किसी शब्द को भाषा के निर्धारित नियमों के अनुसार सही अक्षरों और मात्राओं के साथ लिखना वर्तनी कहलाता है।

उदाहरण:

अशुद्ध वर्तनी शुद्ध वर्तनी

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn Teach Grow

विधालय	विद्यालय
परिक्षा	परीक्षा
आवश्यक्ता	आवश्यकता
उज्जवल	उज्ज्वल
कृप्या	कृपया

वर्तनी सुधार के उपाय

1. नियमित श्रुतलेख करवाना।
2. शब्दकोश का प्रयोग करना।
3. कठिन शब्दों की सूची बनाना।
4. बार-बार लिखने का अभ्यास करना।
5. विद्यार्थियों की गलतियों को समझाकर सुधारना।

इकाई–2 का माइंड मैप

व्याकरण शिक्षण

वर्ण

स्वर एवं व्यंजन

शब्द

तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी

संधि

स्वर, व्यंजन, विसर्ग

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow

उपसर्ग-प्रत्यय

शब्द के आरंभ एवं अंत में

पद

विकारी एवं अविकारी

भाषा शुद्धता

उच्चारण एवं वर्तनी

उद्देश्य – शुद्ध एवं व्यवस्थित भाषा का ज्ञान

इकाई–3 : रचना शिक्षण की विधियाँ

1. रचना का अर्थ

रचना का अर्थ है अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और कल्पनाओं को उचित शब्दों तथा वाक्यों के माध्यम से मौखिक या लिखित रूप में प्रस्तुत करना।

रचना भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा विद्यार्थी अपने ज्ञान और विचारों को व्यवस्थित रूप से व्यक्त करना सीखते हैं।

उदाहरण: किसी विद्यार्थी द्वारा 'मेरा विद्यालय' विषय पर अनुच्छेद लिखना रचना कहलाता है।

2. रचना का महत्व

1. **विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति का विकास होता है।**

2. विचारों को व्यवस्थित करने की क्षमता बढ़ती है।
3. भाषा संबंधी ज्ञान में वृद्धि होती है।
4. शब्द भंडार विकसित होता है।
5. लेखन कौशल में सुधार होता है।
6. आत्मविश्वास और रचनात्मकता बढ़ती है।
7. विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से विचार व्यक्त करना आता है।

3. रचना शिक्षण के उद्देश्य

- मौलिक विचारों को विकसित करना।
- शुद्ध एवं सरल भाषा का प्रयोग सिखाना।
- वाक्य निर्माण की योग्यता विकसित करना।
- विचारों को क्रमबद्ध रूप में लिखना सिखाना।
- व्याकरण एवं वर्तनी संबंधी गलतियाँ दूर करना।
- रचनात्मक लेखन के प्रति रुचि पैदा करना।

4. रचना शिक्षण की प्रमुख विधियाँ

1. अनुकरण विधि

इस विधि में विद्यार्थी किसी आदर्श रचना को देखकर उसी प्रकार रचना करना सीखते हैं।

उदाहरण – पुस्तक में दिए गए पत्र को देखकर नया पत्र लिखना।

2. प्रश्नोत्तर विधि

शिक्षक विद्यार्थियों से विषय से संबंधित प्रश्न पूछते हैं और उनके उत्तरों के आधार पर रचना तैयार करवाते हैं।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn Teach Grow

3. चित्र वर्णन विधि

विद्यार्थियों को चित्र दिखाकर उसके आधार पर रचना लिखवाई जाती है।

4. स्वतंत्र रचना विधि

विद्यार्थियों को अपनी कल्पना और अनुभव के आधार पर किसी विषय पर लिखने के लिए प्रेरित किया जाता है।

5. कहानी विधि

किसी कहानी के आधार पर उसके पात्रों, घटनाओं और संदेश को लिखवाया जाता है।

5. रचना के लिखित रूप

(क) पत्र लेखन (Letter Writing)

पत्र का अर्थ

अपने विचारों, भावनाओं और सूचनाओं को लिखित रूप में किसी दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने का माध्यम पत्र कहलाता है।

पत्र के माध्यम से हम अपने मित्रों, रिश्तेदारों, अधिकारियों और संस्थाओं से संपर्क करते हैं।

पत्र के प्रकार

1. अनौपचारिक पत्र: जो पत्र अपने मित्रों, परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों को लिखे जाते हैं।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

उदाहरण – मित्र को जन्मदिन की बधाई देना।

2. औपचारिक पत्र: जो पत्र अधिकारियों, प्रधानाचार्य या किसी संस्था को लिखे जाते हैं।

उदाहरण – बीमारी के कारण छुट्टी के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र।

पत्र का प्रारूप

1. **प्रेषक का पता।**
2. **दिनांक।**
3. **संबोधन।**
4. **विषय (औपचारिक पत्र में)।**
5. **पत्र का मुख्य भाग।**
6. **धन्यवाद या समापन।**
7. **हस्ताक्षर एवं नाम।**

उदाहरण – अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य जी,

राजकीय प्राथमिक विद्यालय,

जलालाबाद।

विषय: एक दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

ASHISH KUMAR Assistant Professor Teach • Grow

सविनय निवेदन है कि मुझे किसी आवश्यक कार्य के कारण दिनांक 25 नवंबर को विद्यालय आने में असमर्थता होगी। अतः आपसे निवेदन है कि मुझे एक दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी विद्यार्थी

नाम: राहुल

कक्षा: पाँचवीं

(ख) निबंध लेखन (Essay Writing)

निबंध का अर्थ

किसी विषय पर अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को क्रमबद्ध तथा विस्तृत रूप में लिखना निबंध कहलाता है।

निबंध के प्रमुख भाग

1. प्रस्तावना – विषय का परिचय।
2. मुख्य भाग – विषय का विस्तार।
3. उपसंहार – विषय का निष्कर्ष।

निबंध के प्रकार

- वर्णनात्मक निबंध – किसी स्थान या वस्तु का वर्णन।
- विचारात्मक निबंध – किसी विचार या समस्या पर चर्चा।
- भावात्मक निबंध – भावनाओं पर आधारित।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

- **विवरणात्मक निबंध – किसी घटना या अनुभव का विवरण।**

उदाहरण – मेरा विद्यालय

प्रस्तावना: मेरा विद्यालय बहुत सुंदर और स्वच्छ है। मैं प्रतिदिन अपने विद्यालय जाता हूँ।

मुख्य भाग: मेरे विद्यालय में अनेक शिक्षक हैं। सभी शिक्षक हमें प्रेमपूर्वक पढ़ाते हैं। विद्यालय में पुस्तकालय, खेल का मैदान और स्वच्छ कक्षाएँ हैं। यहाँ पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं।

उपसंहार: मुझे अपने विद्यालय से बहुत प्रेम है। मेरा विद्यालय मेरे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।



(ग) अनुच्छेद लेखन (Paragraph Writing)

अनुच्छेद का अर्थ

किसी एक विषय पर सीमित शब्दों में अपने विचारों को एक क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना अनुच्छेद कहलाता है।

अनुच्छेद की विशेषताएँ

1. अनुच्छेद एक ही मुख्य विषय पर आधारित होता है।
2. भाषा सरल एवं स्पष्ट होती है।
3. विचारों में क्रमबद्धता होती है।
4. अनावश्यक बातों से बचना चाहिए।
5. अनुच्छेद का एक उचित शीर्षक होना चाहिए।

उदाहरण – वृक्षों का महत्व

वृक्ष हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे हमें ऑक्सीजन, फल, फूल और लकड़ी प्रदान करते हैं। वृक्ष वातावरण को शुद्ध रखते हैं तथा वर्षा में भी सहायता करते हैं। वे अनेक जीव-जंतुओं को आश्रय देते हैं। हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए और उनकी रक्षा करनी चाहिए।

(घ) कहानी लेखन (Story Writing)

कहानी का अर्थ

किसी घटना, अनुभव या कल्पना को पात्रों और घटनाओं के माध्यम से रोचक ढंग से प्रस्तुत करना कहानी कहलाता है।

कहानी के प्रमुख तत्व

1. कथानक – कहानी की मुख्य घटना।
2. पात्र – कहानी में भाग लेने वाले व्यक्ति।
3. संवाद – पात्रों के बीच बातचीत।
4. वातावरण – कहानी की परिस्थितियाँ।
5. उद्देश्य – कहानी से मिलने वाली शिक्षा।

उदाहरण – ईमानदार लकड़हारा

एक बार एक गरीब लकड़हारा नदी के किनारे लकड़ी काट रहा था। अचानक उसकी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई। वह बहुत दुखी हुआ। तभी एक देवदूत प्रकट हुआ और उसने सोने तथा चाँदी की कुल्हाड़ी दिखाई। लकड़हारे ने दोनों कुल्हाड़ियाँ लेने से मना कर दिया और अपनी लोहे की कुल्हाड़ी को पहचान लिया। उसकी ईमानदारी से प्रसन्न होकर देवदूत ने उसे तीनों कुल्हाड़ियाँ दे दीं।

शिक्षा: ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है।

(ङ) संवाद लेखन (Dialogue Writing)

संवाद का अर्थ

दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली बातचीत को संवाद कहते हैं।

संवाद लेखन की विशेषताएँ

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

- भाषा सरल और स्वाभाविक होनी चाहिए।
- बातचीत विषय के अनुसार होनी चाहिए।
- संवाद छोटे और प्रभावशाली होने चाहिए।
- प्रत्येक पात्र की बात स्पष्ट होनी चाहिए।

उदाहरण – शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवाद

शिक्षक: राहुल, तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो?

राहुल: सर, मैं बड़ा होकर शिक्षक बनना चाहता हूँ।

शिक्षक: शिक्षक क्यों बनना चाहते हो?

राहुल: क्योंकि शिक्षक बच्चों को शिक्षा देकर उनका भविष्य बनाते हैं।

शिक्षक: बहुत अच्छी बात है। तुम्हें मेहनत और लगन से पढ़ाई करनी चाहिए।

राहुल: जी सर, मैं पूरी मेहनत करूँगा।

(च) सार संक्षेपण (Precis Writing)

सार संक्षेपण का अर्थ

किसी बड़े लेख, कहानी या अनुच्छेद के मुख्य विचारों को कम शब्दों में स्पष्ट रूप से लिखना सार संक्षेपण कहलाता है।

सार संक्षेपण के नियम

1. **पूरे अनुच्छेद को ध्यान से पढ़ना चाहिए।**

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

2. मुख्य विचारों को पहचानना चाहिए।
3. अनावश्यक उदाहरण हटाने चाहिए।
4. अपनी भाषा में सार लिखना चाहिए।
5. मूल भाव में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
6. सार छोटा और स्पष्ट होना चाहिए।

उदाहरण:

मूल विचार: पेड़-पौधे हमें ऑक्सीजन, फल, फूल और लकड़ी देते हैं। वे वातावरण को शुद्ध रखते हैं तथा अनेक जीवों को आश्रय प्रदान करते हैं। इसलिए हमें पेड़ों की रक्षा करनी चाहिए।

सार: पेड़-पौधे हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं। वे पर्यावरण की रक्षा करते हैं, इसलिए हमें पेड़ लगाने चाहिए।

(छ) रिपोर्ट लेखन (Report Writing)

रिपोर्ट का अर्थ

किसी घटना, कार्यक्रम या गतिविधि का तथ्यपूर्ण और क्रमबद्ध विवरण लिखना रिपोर्ट लेखन कहलाता है।

रिपोर्ट के प्रमुख भाग

1. शीर्षक।
2. स्थान और दिनांक।
3. कार्यक्रम का परिचय।
4. कार्यक्रम का मुख्य विवरण।
5. प्रमुख अतिथियों का उल्लेख।
6. कार्यक्रम का निष्कर्ष।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

उदाहरण – विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह

शीर्षक: विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

15 अगस्त को हमारे विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण से हुआ। इसके बाद विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीत, भाषण और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रधानाचार्य जी ने विद्यार्थियों को स्वतंत्रता दिवस का महत्व बताया। अंत में सभी विद्यार्थियों को मिठाई वितरित की गई। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

इकाई–3 का माइंड मैप

रचना शिक्षण

विचारों की लिखित अभिव्यक्ति

पत्र लेखन

औपचारिक एवं अनौपचारिक

निबंध लेखन

प्रस्तावना, मुख्य भाग, उपसंहार

अनुच्छेद

एक विषय, सीमित शब्द

कहानी

पात्र, कथानक, शिक्षा

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow

संवाद

दो या अधिक व्यक्तियों की बातचीत

सार संक्षेपण

मुख्य विचारों का संक्षिप्त रूप

रिपोर्ट

घटना एवं कार्यक्रम का विवरण

उद्देश्य – मौलिक, शुद्ध एवं प्रभावशाली लेखन

इकाई–4 : साहित्यिक विधाओं का परिचय

1. साहित्य का अर्थ एवं परिचय

साहित्य भाषा का वह रूप है जिसमें मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों, कल्पनाओं और जीवन की घटनाओं को सुंदर एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है, क्योंकि इसमें समाज की संस्कृति, परंपराओं, समस्याओं और जीवन मूल्यों का चित्रण होता है।

साहित्य का महत्व

1. **मनुष्य के विचारों और भावनाओं का विकास करता है।**
2. **समाज और संस्कृति का ज्ञान प्रदान करता है।**
3. **नैतिक मूल्यों का विकास करता है।**

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow

4. मनोरंजन के साथ ज्ञान भी देता है।
5. भाषा को सुंदर और प्रभावशाली बनाता है।
6. कल्पना शक्ति और रचनात्मकता बढ़ाता है।

2. कविता (Poetry)



कविता का अर्थ

कविता साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। इसमें कवि अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को सुंदर, लयात्मक तथा भावपूर्ण शब्दों में प्रस्तुत करता है।

कविता में भाव, कल्पना, रस, छंद और अलंकार का विशेष महत्व होता है।

कविता की विशेषताएँ

1. कविता में भावनाओं की प्रधानता होती है।
2. इसमें लय और संगीतात्मकता होती है।
3. भाषा सुंदर एवं प्रभावशाली होती है।
4. कल्पना शक्ति का प्रयोग किया जाता है।
5. कविता में समाज, प्रकृति और जीवन का चित्रण होता है।

कविता के प्रमुख प्रकार

- गीतिकाव्य – भावनाओं पर आधारित कविता।
- महाकाव्य – महान नायक के जीवन पर आधारित विस्तृत काव्य।
- खंडकाव्य – जीवन की किसी एक घटना या भाग पर आधारित काव्य।
- भक्तिकाव्य – ईश्वर की भक्ति पर आधारित कविता।
- देशभक्ति कविता – देश प्रेम की भावना व्यक्त करने वाली कविता।

कविता शिक्षण का महत्व

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

- बच्चों में कल्पना शक्ति विकसित होती है।
- भाषा का सौंदर्य समझने में सहायता मिलती है।
- उच्चारण और लय का विकास होता है।
- नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास होता है।

उदाहरण: प्रकृति पर आधारित कविता में पेड़-पौधों, नदियों, पहाड़ों और पक्षियों की सुंदरता का वर्णन किया जाता है।

3. कहानी (Story)



Learn • Teach • Grow

कहानी का अर्थ

कहानी साहित्य की एक लोकप्रिय विधा है। इसमें किसी घटना, अनुभव या कल्पना को पात्रों और घटनाओं के माध्यम से रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

कहानी छोटी या बड़ी हो सकती है। इसमें किसी विशेष उद्देश्य या संदेश को प्रस्तुत किया जाता है।

कहानी के प्रमुख तत्व

1. कथानक – कहानी की मुख्य घटना।
2. पात्र – कहानी में भाग लेने वाले व्यक्ति।
3. संवाद – पात्रों के बीच बातचीत।
4. वातावरण – कहानी की परिस्थितियाँ।
5. भाषा एवं शैली – कहानी प्रस्तुत करने का तरीका।
6. उद्देश्य – कहानी से मिलने वाली शिक्षा।

कहानी के प्रकार

- सामाजिक कहानी।
- ऐतिहासिक कहानी।
- धार्मिक कहानी।
- पौराणिक कहानी।
- नैतिक कहानी।
- काल्पनिक कहानी।

कहानी का महत्व

- बच्चों में पढ़ने की रुचि बढ़ती है।
- कल्पना शक्ति विकसित होती है।
- नैतिक शिक्षा प्राप्त होती है।
- शब्द भंडार में वृद्धि होती है।
- सुनने और समझने की क्षमता विकसित होती है।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

उदाहरण: पंचतंत्र की कहानियाँ, ईमानदार लकड़हारा और प्यासा कौआ।

4. निबंध (Essay)

निबंध का अर्थ

किसी विषय पर अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को क्रमबद्ध, स्पष्ट तथा विस्तृत रूप में प्रस्तुत करना निबंध कहलाता है।

निबंध में लेखक किसी विषय का परिचय देता है, उसका विस्तार करता है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत करता है।

निबंध की विशेषताएँ

1. **भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।**
2. **विचारों में क्रमबद्धता होनी चाहिए।**
3. **विषय का उचित विस्तार होना चाहिए।**
4. **व्याकरण और वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए।**
5. **अनावश्यक बातों से बचना चाहिए।**

निबंध के प्रकार

1. **वर्णनात्मक निबंध।**
2. **विचारात्मक निबंध।**
3. **भावात्मक निबंध।**
4. **विवरणात्मक निबंध।**

निबंध के प्रमुख भाग

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

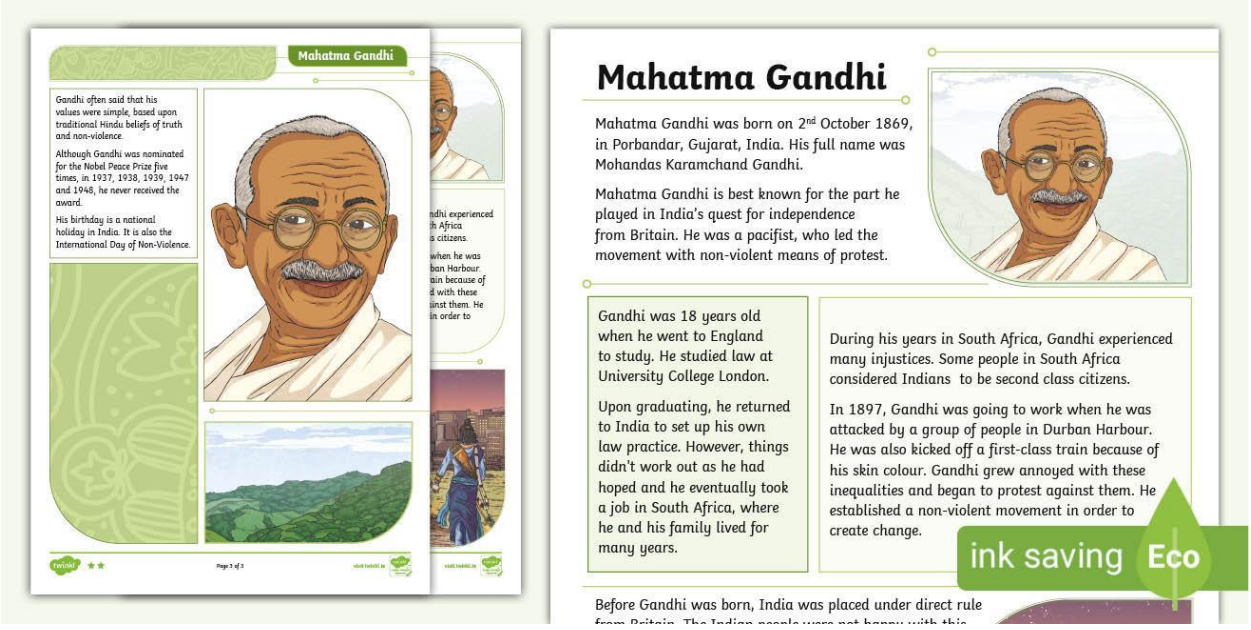
- प्रस्तावना।
- मुख्य भाग।
- उपसंहार।

निबंध शिक्षण का महत्व

- विद्यार्थियों में विचार शक्ति विकसित होती है।
- लेखन कौशल का विकास होता है।
- स्वतंत्र चिंतन की क्षमता बढ़ती है।
- भाषा एवं शब्द भंडार में वृद्धि होती है।

उदाहरण: मेरा विद्यालय, स्वच्छ भारत अभियान, पर्यावरण संरक्षण, मेरा प्रिय त्योहार।

5. जीवनी (Biography)



जीवनी का अर्थ

किसी महान व्यक्ति के जीवन, जन्म, शिक्षा, संघर्ष, उपलब्धियों, कार्यों और योगदान का वर्णन जीवनी कहलाता है।

जीवनी में लेखक किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करता है।

जीवनी की विशेषताएँ

1. इसमें किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन का वर्णन होता है।
2. घटनाएँ वास्तविक होती हैं।
3. जन्म, शिक्षा और परिवार की जानकारी दी जाती है।
4. व्यक्ति के संघर्ष और उपलब्धियों का उल्लेख होता है।
5. भाषा सरल और तथ्यपूर्ण होती है।

जीवनी के प्रमुख भाग

1. जन्म एवं परिवार।
2. बचपन और शिक्षा।
3. जीवन का संघर्ष।
4. प्रमुख कार्य एवं उपलब्धियाँ।
5. समाज के प्रति योगदान।
6. मृत्यु एवं विरासत (जहाँ लागू हो)।

जीवनी का महत्व

- महान व्यक्तियों के जीवन से प्रेरणा मिलती है।
- परिश्रम और संघर्ष का महत्व समझ आता है।
- नैतिक मूल्यों का विकास होता है।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

- देश और समाज के महान व्यक्तियों का ज्ञान प्राप्त होता है।

उदाहरण: महात्मा गांधी, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ. भीमराव अंबेडकर और स्वामी विवेकानंद की जीवनी।

6. आत्मकथा (Autobiography)

आत्मकथा का अर्थ

जब कोई व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं, अनुभवों, संघर्षों और उपलब्धियों का वर्णन स्वयं करता है, तो उसे आत्मकथा कहते हैं।

आत्मकथा में लेखक अपने जीवन के बारे में स्वयं लिखता है।

आत्मकथा की विशेषताएँ

1. लेखक स्वयं अपने जीवन का वर्णन करता है।
2. इसमें व्यक्तिगत अनुभवों का उल्लेख होता है।
3. जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है।
4. भाषा आत्मीय और भावपूर्ण होती है।
5. इसमें संघर्षों एवं उपलब्धियों का वर्णन होता है।

आत्मकथा का महत्व

- व्यक्ति के वास्तविक अनुभवों का ज्ञान मिलता है।
- संघर्ष और सफलता की प्रेरणा मिलती है।
- जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।
- आत्मचिंतन की भावना बढ़ती है।

उदाहरण: महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग'।

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn Create Grow

जीवनी एवं आत्मकथा में अंतर

जीवनी	आत्मकथा
दूसरे व्यक्ति के जीवन का वर्णन	स्वयं के जीवन का वर्णन
लेखक कोई अन्य व्यक्ति होता है	लेखक स्वयं उस व्यक्ति का होता है
बाहरी दृष्टिकोण अधिक होता है	व्यक्तिगत अनुभव अधिक होते हैं
तथ्य एवं घटनाओं का वर्णन	अनुभव, विचार एवं घटनाओं का वर्णन

7. एकांकी (One Act Play)

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow



एकांकी का अर्थ

एकांकी नाटक का वह रूप है जिसमें एक ही अंक में किसी एक मुख्य घटना या समस्या को प्रस्तुत किया जाता है।

यह नाटक की एक छोटी एवं प्रभावशाली साहित्यिक विधा है।

एकांकी की विशेषताएँ

1. एकांकी में सामान्यतः एक ही अंक होता है।
2. इसमें पात्रों की संख्या सीमित होती है।
3. एक मुख्य घटना या समस्या होती है।
4. संवाद सरल और प्रभावशाली होते हैं।

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow

5. घटनाओं का विकास तेजी से होता है।
6. समय और स्थान सीमित होते हैं।

एकांकी के प्रमुख तत्व

- कथानक।
- पात्र।
- संवाद।
- अभिनय।
- दृश्य एवं मंच व्यवस्था।
- उद्देश्य।

एकांकी का महत्व

1. विद्यार्थियों में अभिनय क्षमता विकसित होती है।
2. बोलने और संवाद करने का कौशल बढ़ता है।
3. आत्मविश्वास विकसित होता है।
4. सहयोग और सामूहिक भावना बढ़ती है।
5. सामाजिक समस्याओं को समझने में सहायता मिलती है।

उदाहरण: स्वच्छता पर आधारित एकांकी, बाल विवाह की समस्या पर एकांकी और पर्यावरण संरक्षण पर एकांकी।

इकाई–4 का माइंड मैप

साहित्यिक विधाएँ

साहित्य के प्रमुख रूप

कविता

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

भाव, रस, लय एवं छंद

कहानी

पात्र, घटना एवं संदेश

निबंध

प्रस्तावना, विस्तार, निष्कर्ष

जीवनी

दूसरे व्यक्ति का जीवन

आत्मकथा

स्वयं के जीवन का वर्णन

एकांकी

एक अंक का नाटक

उद्देश्य – साहित्यिक रुचि, भाषा और व्यक्तित्व का विकास

चारों इकाइयों का संयुक्त माइंड मैप

हिंदी भाषा एवं शिक्षण

D.El.Ed. द्वितीय वर्ष

इकाई–1

भाषायी कौशल

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow

श्रवण, कथन, लेखन, पठन

इकाई–2

व्याकरण शिक्षण

वर्ण, शब्द, संधि, उपसर्ग, प्रत्यय, पद

इकाई–3

रचना शिक्षण

पत्र, निबंध, कहानी, संवाद, रिपोर्ट

इकाई–4

साहित्यिक विधाएँ

कविता, कहानी, निबंध, जीवनी, आत्मकथा, एकांकी

अंतिम लक्ष्य

शुद्ध भाषा, प्रभावशाली अभिव्यक्ति, रचनात्मकता एवं साहित्यिक ज्ञान।

परीक्षा की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न

इकाई–1

1. **भाषायी कौशल का अर्थ एवं महत्व समझाइए।**
2. **श्रवण कौशल की परिभाषा, उद्देश्य एवं विधियाँ लिखिए।**
3. **श्रवण दोष के कारण एवं सुधार के उपाय बताइए।**

ASHISH KUMAR Assistant Professor Learn • Teach • Grow

4. कथन कौशल का अर्थ एवं महत्व समझाइए।
5. लेखन कौशल की विभिन्न विधियों का वर्णन कीजिए।
6. पठन कौशल के प्रकार एवं महत्व समझाइए।

इकाई–2

1. व्याकरण का अर्थ एवं महत्व लिखिए।
2. आगमन एवं निगमन विधि में अंतर बताइए।
3. स्वर एवं व्यंजन की परिभाषा और भेद लिखिए।
4. संधि की परिभाषा एवं प्रकार उदाहरण सहित समझाइए।
5. उपसर्ग एवं प्रत्यय में अंतर बताइए।
6. विकारी एवं अविकारी पदों का वर्णन कीजिए।
7. उच्चारण एवं वर्तनी का अर्थ तथा महत्व लिखिए।

इकाई–3

1. रचना का अर्थ, महत्व एवं उद्देश्य समझाइए।
2. पत्र लेखन का अर्थ एवं प्रकार बताइए।
3. निबंध लेखन की विशेषताएँ लिखिए।
4. कहानी लेखन के तत्व समझाइए।
5. संवाद लेखन का अर्थ एवं विशेषताएँ लिखिए।
6. सार संक्षेपण के नियम लिखिए।
7. रिपोर्ट लेखन का अर्थ एवं प्रारूप समझाइए।

इकाई–4

1. कविता का अर्थ एवं विशेषताएँ लिखिए।
2. कहानी का अर्थ, तत्व एवं प्रकार समझाइए।
3. निबंध का अर्थ एवं प्रकार लिखिए।

4. जीवनी का अर्थ एवं महत्व बताइए।
5. आत्मकथा का अर्थ एवं विशेषताएँ लिखिए।
6. जीवनी एवं आत्मकथा में अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. एकांकी का अर्थ, तत्व एवं महत्व समझाइए।

याद रखने योग्य महत्वपूर्ण अंतर

विषय	मुख्य अंतर
श्रवण और पठन	सुनना और पढ़ना
कथन और लेखन	बोलना और लिखना
आगमन और निगमन	उदाहरण से नियम और नियम से उदाहरण
उपसर्ग और प्रत्यय	शब्द के पहले और अंत में लगते हैं
जीवनी और आत्मकथा	दूसरे का जीवन और स्वयं का जीवन
सस्वर और मौन पठन	आवाज के साथ और बिना आवाज पढ़ना

ASHISH KUMAR
Assistant Professor
Learn • Teach • Grow